

रहीम

कवि परिचय :

रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था । उनका जन्म सन् 1556 के लगभग लाहौर में हुआ । उनके पिता मुगल बादशाह अकबर के अभिभावक तथा सेनापति बैरम खाँ थे । रहीम मुगलों के महल में पले-बढ़े । वे बड़े प्रतिभाशाली थे । वे अरबी, तुर्की, फारसी और संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे, साथ ही हिन्दी काव्य-कविता के बड़े मर्मज्ञ थे । इसलिए अकबर के दरबार के मशहूर नवरत्नों में रहीम गिने जाते थे । वे जन्म से मुसलमान होते हुए भी हिन्दुओं के प्रति प्रेम-भाव रखते थे ।

रहीम तुलसीदास, सूरदास, तानसेन और केशवदास के समकालीन थे । मार्मिकता और कवि-हृदय की सच्ची संवेदना रहीम के साहित्य की विशेषता है । मुसलमान होते हुए भी उन्होंने अपने आपको कृष्ण-भक्ति के गहरे रंग में रंगा लिया था । अनुभूतियों के आधार पर उन्होंने अपनी रचनाओं में नीति के साथ-साथ भक्ति तथा प्रेम का सरस वर्णन किया है । उन्होंने अपने दोहों में मानव तथा समाज के कल्याण के साथ-साथ हिन्दू-मुस्लिम की एकता पर भी बल दिया है ।

रहीम की रचनाएँ हैं- रहीम सतसई, शृंगार सतसई, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली, बरवै नायिका भेद-वर्णन आदि ।

उनकी काव्य-रचना में प्रयुक्त छन्द हैं- दोहा, कवित्त, सवैया, सोरठा तथा बरवै ।

रहीम की भाषा ब्रज और अवधी है ।

- जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।
- कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
बिपत्ति कसौटि जे कसे, तेइ साँचे मीत ॥

शब्दार्थ

उत्तम - श्रेष्ठ । प्रकृति - गुण, स्वभाव । का - क्या । करि सकत - कर सकता है । कुसंग - बुरी संगति । लपटे - लिपटना । भुजंग - साँप । सगे - साथी । बहु रीत - बहु भाँति । कसौटि - परख या जाँच । कसे - परखे । तेई - वही । साँचे - सच्चा । मीत-मित्र ।

दोहों को समझें :

- रहीम कहते हैं कि जो व्यक्ति उत्तम आचरण और गुणों का होता है, उस पर कुसंग यानी बुरी संगति का प्रभाव नहीं पड़ता । अर्थात् सज्जन व्यक्ति बुरे लोगों के निकट होने पर भी उनकी बुराई को नहीं अपनाता । जैसे - चन्दन-पेड़ पर जहरीले साँप लपेटे रहने पर भी चन्दन पर उसके जहर का कोई असर नहीं होता । यहाँ चन्दन-पेड़ के साथ उत्तम गुणवाले व्यक्ति तथा साँप के साथ कुसंग की तुलना की गयी है ।
- रहीम का कहना है कि इस संसार में धन-दौलत के साथी अनेक होते हैं । अर्थात् किसी इन्सान के पास पैसा होने पर उससे मित्रता स्थापित करने लोग विविध ढंग से

आ टपकते हैं । परंतु उनमें से कौन सच्चा मित्र है और कौन नहीं, इस बात का पता विपत्ति के समय चलता है । अर्थात् सच्चा मित्र उसे कहा जाएगा जो अपने मित्र को उसके दुर्दिन में भी न छोड़े, अपितु उसकी सहायता करे ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) उत्तम प्रकृतिवाले लोगों के प्रति रहीम ने क्या कहा है ?

(ख) सच्चे मित्र का लक्षण क्या है - पठित दोहे के आधार पर समझाइए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) किस पर कुसंग का प्रभाव नहीं होता ?

(ख) चन्दन वृक्ष पर कौन लिपटा रहता है ?

(ग) किस पर साँप के विष का प्रभाव नहीं होता ?

(घ) साँप के साथ किसकी तुलना की गयी है ?

(ङ) सच्चा मित्र कौन होता है ?

3. अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(क) चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।

(ख) विपत्ति कसौटि जे कसे, तेइ साँचे मीत ।

4. पंक्तियाँ पूरी कीजिए ।

(क) जो रहीम उत्तम प्रकृति, ।

(ख), तेइ साँचे मीत ।

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए ।

उत्तम _____, मित्र _____

कुसंग _____, विष _____

2. नीचे लिखे अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कीजिए ।

कसौटि, मीत्र, संपत्ति, भूजंग, उत्तम

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

विष, भुजंग, उत्तम, विपत्ति, मित्र

4. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

कुसंग, कसौटी, चंदन, संपत्ति, मित्र

